Monad University Hapur

Faculty of Law
Subject - Legal education and Research methodology
Topic – Legal education
Sub topic – शिक्षण की व्याख्यान पद्धति - गुण व दोष

शिक्षण की व्याख्यान पद्धति - गुण व दोष

1 प्रस्तावना

व्याख्यान पद्धति कक्षा में शिक्षकों द्वारा छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सबसे पुरानी विधियों में से एक है। इसलिए, व्याख्यान पद्धति का अर्थ, इसकी योग्यता और इस के नुकसानो प रचर्चा करना आवश्यक हो रहा है ताकि इस पद्धति को और प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सके शिक्षण, अपने सरलतम अर्थों में, ज्ञान प्रदान करता है। यह अनुभव का बोधक है व अनुभवों से जुड़ा है। इस अनुभव में तथ्य, सत्य, सिद्धांत, विचार या आदर्श शामिल हो सकते हैं या इसमें कला की प्रक्रिया या कौशल शामिल हो सकते हैं। शिक्षक प्रेषक या ज्ञान का स्रोत है । शैक्षिक सामग्री सूचना या संदेश है और छात्र सूचना को प्राप्त करने वाला है। इस प्रकार ज्ञान को भेजने और प्राप्त करने को संचार के रूप में जाना जाता है। संचार के विभिन्न तरीके हैं। यह शब्दों के उपयोग द्वारा , संकेतों द्वारा, वस्तुओं द्वारा, क्रियाओं द्वारा या उदाहरणों द्वारा सिखाया जा सकता है शिक्षण अनुभव का संचार है। यह एक चित्र को चित्रित करने जैसा है जो दूसरे के मन में एक कल्पना पैदा करता है। यह विचार और समझ पर प्रभाव डालता है और उन्हें कुछ सच्चाई की समझ के लिए आकार देता है जिसे शिक्षक जानता है और संवाद करना चाहता है।

2 शिक्षण की व्याख्यान पद्धति- गुण व दोष

व्याख्यान पद्धति ज्ञान की व्यवस्थित प्रस्तुति है। इसे शिक्षण का प्रभावी साधन माना जाता है। यह आदर्शवाद के दर्शन द्वारा दी गई सबसे पुरानी शिक्षण पद्धति है।

जिसे शिक्षा के प्रसार में उपयोग किया जाता है। व्याख्यान पद्धति में छात्रों को स्पष्टीकरण या उदाहरणों के द्वारा सिद्धान्तों को समझाने की शिक्षण प्रक्रिया शामिल की जाती है। यह विधि छात्रों के दिमाग में विधिक सामग्री को सुगमता से समझ देती है।

2.1 व्याख्यान विधि की अवधारणा

व्याख्यान द्वारा शिक्षण, संभवतः कक्षा में शिक्षकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सबसे पुराने तरीकों में से एक है। शिक्षण की व्यापक रूप से प्रचलित विधि के रूप में, एक शिक्षक एक ही समय में बड़ी संख्या में छात्रों तक ज्ञान पहुँचा सकता है। बड़ी मात्रा में विभिन्न सामग्रियों को कम समय में छात्रों को समझा सकता है। व्याख्यान पद्धति एक शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण है जिसमें शिक्षक से छात्रों को एक तरफा ज्ञान का प्रवाह होता है। शिक्षण का कार्य शिक्षक व छात्रों के मध्य ज्यादातर लेखन और बातचीत (चाकऔरसंवाद) से होता है। जिसमे केवल छात्रों द्वारा सूचना सुनने के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में और कुछ नोट्स लिखने और कुछ या कोई प्रश्न पूछने या न पूछने की क्रिया होती है। इस तरह की पद्धति में मूल बात यह है कि शिक्षक के पास ज्ञान है, छात्र ज्ञान प्राप्त कर सकता है, और शिक्षक छात्रों को ज्ञान दे सकता है। व्याख्यान पद्धति शिक्षा देने के लिए काफी सस्ती है क्योंकि इसमें कोई विशेष अन्य संसाधनों की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए नाम मात्र की योजना की आवश्यकता है।

यह तरीका आसान लग सकता है, किंतु शिक्षकों को विषय वस्तु को प्रस्तुत करने के लिए अपने व्याख्यान की योजना बनाने और व्यवस्थित करने के लिए प्रयास करना चाहिये। और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करना चाहिये।प्रारम्भ में, कानून शिक्षक को व्याख्यान के विषय की पहचान करनी चाहिए और इसे पिछले पाठों से जोड़ना चाहिए और विषय पर रुचि को प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए। व्याख्यान के सभी तत्वों को एकता के क्रम में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, ताकि

छात्रों को एक रूपरेखा मिल जाय और छात्र नए ज्ञान के बारे में जान सके जोकि शिक्षक उन्हें अवशोषित कराना चाहता है। ज्ञान को छोटे पर्याप्त खुराक में प्रस्तुत किया जाता है ताकि छात्र सामग्री को अवशोषित कर सकें और ज्ञान को धीमी व पर्याप्त गति से प्रस्तुत करना चाहिये। शिक्षण की गति इतनी कम नही होनी चाहिए कि छात्रों को उदासीन बना दे। उपयोग की जाने वाली शब्दावली का स्तर और विषय की तकनी की छात्रों की क्षमता के अनुरूप होना चाहिए। यदि शिक्षक अधिक सक्रिय है और छात्र निष्क्रिय हैं, तो शिक्षण सही नही है इसलिये शिक्षक कक्षा में छात्रों को चौकस रखने के लिए प्रश्न उत्तर का भी उपयोग करता है। इसका उपयोग सूचना को प्रेरित करने, स्पष्ट करने, विस्तार करने और समीक्षा करने के लिए किया जाता है। अपनी आवाज़ को बदलकर, सरल उपकरणों का उपयोग करके, एक शिक्षक अपने व्याख्यान को वितरित करते हुए, प्रभावी ढंग से पाठ वितरित कर सकता है; एक शिक्षक अपने चेहरे के भावों, इशारों से संकेत दे सकता है और सिद्धान्तों के सही अर्थ व मर्म को व्यक्त कर सकता है जिसे वह व्यक्त करना चाहता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जब शिक्षक अपने विचारों या किसी तथ्य को स्पष्ट करने के लिए लंबी या छोटी व्याख्या की मदद लेता है, तो उस व्याख्या को व्याख्यान या व्याख्यान विधि कहा जाता है।

एक व्याख्यान का प्राथमिक लाभ कम समय में बहुत सारे तथ्यों को प्रस्तुत करने की क्षमता है लेकिन इसके लिये यह आवश्यक है कि छात्रों को प्रस्तुत किए जाने वाले विषय छात्रों द्वारा स्वीकार करना और समझ आना चाहिए। व्याख्यान पद्धति योजना और तैयारी के लिए शिक्षक के समय पर कम मांग करती है और इसलिए यह शिक्षण का एक आकर्षक और आसान तरीका है।

2.2 शिक्षण की व्याख्यान पद्धति के गुण:

1. व्याख्यान पद्धति में शिक्षक विषय, उद्देश्य, सामग्री, अनुक्रम को नियंत्रित करता है। जहाँ शिक्षक की इच्छा हो वहाँ उस तथ्य पर जोर दिया जा सकता है।

2. व्याख्यान का उपयोग छात्रों को उपलब्ध जानकारी का विस्तार करने और व्याख्या करने के लिए, और समीक्षा करने के लिए, रुचि बढ़ाने और स्पष्ट करने के लिए किया जा सकता है।

3. शिक्षक को सुनने वाले छात्रों की संख्या महत्वपूर्ण नहीं है।

4. छात्र स्पष्टीकरण या अधिक विवरण देने के लिए शिक्षक को कक्षा में कह सकते हैं।

5. व्याख्यान को भविष्य के उपयोग के लिए टेप द्वारा, वीडियो द्वारा या मुद्रित किया जा सकता है।

6. अन्य मीडिया उपकरणों को व्याख्यान के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है।

7. व्याख्यान को आसानी से संशोधित और अद्यतन किया जा सकता है।

8. शिक्षक मुद्दों और समस्याओं से निपटने के तरीके को दिखाने में एक मॉडल के रूप में काम कर सकता है।

9. छात्र पहले से ही व्याख्यान पद्धति से परिचित हैं।

10. यह अपेक्षाकृत कम खर्चीला है क्योंकि इसमें किसी विशेष उपकरण की आवश्यकता नहीं है।

11. व्याख्यान पद्धति में बड़ी सामग्री को कम समय अवधि में कवर किया जा सकता है।

12 व्याख्यान पद्धति उपयोग करने के लिए बहुत ही किफायती है।

2.3 व्याख्यान विधि के दोष:

व्याख्यान पद्धति शिक्षण का एक बहुत ही पारंपरिक तरीका है। इस आधुनिक युग में जब शैक्षिक तरीके और पाठ्यक्रम सामग्री व्यापक सुधारों से गुजर रही है तो

हम पुरानी परंपरा को जारी नहीं रख सकते क्योंकि यह इतनी प्रभावी नहीं है। साथ ही साथ बड़ी उम्र के छात्र लगातार किसी की बात नहीं सुन सकते।

1. कुछ छात्र पहले से ही व्याख्यान की सामग्री को जानते हैं, जबकि कुछ व्याख्यान के लिए तैयार नहीं होते हैं। कुछ छात्र व्याख्यान को सुनने को इच्छुक नहीं होते हैं और जो छात्र सुनने को तैयार नहीं हैं वेबेचैन हो सकते हैं। इस प्रकार की पद्धति शिक्षण को संभावित प्रभाव नहीं दे सकती है।

2. व्याख्यान पद्धति छात्रों के समूह पर आधारित हैं। भारत में कुछ कक्षाओं में सौ से अधिक छात्र हैं। जिससे यह संभव है कि शिक्षक सभी छात्रों पर ध्यान नही दे पाता इसलिए यह शिक्षण के बजाय सभा को संबोधित करने जैसी है।

3.व्याख्यान के पूरे एक घंटे में छात्र की रुचि और ध्यान लगातार बनाए रखना मुश्किल कार्य है। शिक्षक भी लगातार एक ही स्वर, आवाज की मात्रा और अपने व्याख्यान की सामग्री को रोचक बनाए रखने में विफल हो सकता है। व्याख्यान पद्धति गंभीर विषयो पर छात्रों की रुचि लगातार बनाय रखने में कभी कभी विफल हो जाती है।

4.संवाद प्रक्रिया शिक्षक से छात्रों तक ज्यादातर एक तरफा होती है। आम तौर पर कक्षा में छात्र की उपस्थिती बहुत कम होती है। जो छात्र कक्षा में भाग लेते हैं, वे कम संख्या में होते हैं और प्रत्येक कक्षा में लगभग वही छात्र होते हैं जो प्रायः आते हैं।

5.ज्यादातर छात्रों को नोट्स लेने की आदत नहीं होती है। वे कक्षा में इस तरह बैठते हैं जैसे व्याख्यान कोई कहानी सुनाने व सुनने वाला सत्र हो। छात्र या तो डिक्टेशन चाहते हैं या केवल विषय की गंभीरता को समझे बिना बाजार से बने बनाए नोट्स खरीद लेते हैं।

6. शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट नहीं होने पर व्याख्यान प्रभावी नहीं होते हैं।

7. व्याख्यान पद्धति शिक्षक पर छात्र की निर्भरता को प्रोत्साहित करती है।

8. केवल सुनने से ही छात्र बहुत सक्रिय नहीं होते हैं।

3. व्याख्यान पद्धति के प्रभावी उपयोग के लिए दिशा निर्देश

शिक्षक को शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए व्याख्यान पद्धति का उपयोग करते हुए पर्याप्त शिक्षण सहायक सामग्री, अच्छा चित्रण और प्रदर्शन का उपयोग करना चाहिए। एक कॉलेज में व्याख्यान का अधिकतम समय या अवधि बहुत महत्वपूर्ण होती है। युवाछात्रों का अपरिपक्व दिमाग व्याख्यान में कम रुचि लेता है और व्याख्यान में दिए गए बिंदुओं को लिखने की सीमित क्षमता रखता है। हालांकि वयस्क आमतौर पर एक घंटे के लिए व्याख्यान सुन सकते हैं। एक व्याख्यान को प्रभावी बनाने के लिए चर्चा, परियोजना, भूमि का बनाने आदि जैसे अन्य सहभागी तरीकों से वांछित प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं।

व्याख्यान पद्धति में निम्नलिखित नियमों को सावधानीपूर्वक देखा जाना चाहिए:

1. कक्षा में छात्रों को अपनी आँखों में प्रकाश की किरणों से बचने के लिए खिड़कियों से दूर, आरामदायक कुर्सियों / बेंचों पर बैठना चाहिए।

2. शिक्षकों का कम से कम ध्यान भटकाना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि बाहर का शोर छात्रों को शिक्षक की बात सुनने से रोकता है और उनका ध्यान भटकाता है।

3. कमरा न तो बहुत ठंडा और न ही गर्म होना चाहिए। यदि छात्र असहज होते हैं तो वे चिढ़ जाएंगे और शिक्षक जो कह रहे हैं उस पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे।

4.शिक्षकों को एक साथ बहुत से अवधारणाओं को एक साथ पढ़ाने से बचना चाहिए क्योंकि इस से छात्रों कुछ समझ नही आताहै ,बल्कि छात्रों को समीक्षा करने और प्रमुख अवधारणाओं को समझने में मदद करने के लिए विषय को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

5. शिक्षकों को छात्रों को प्रश्न पूछने और टिप्पणी करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि इस से बोरियत कम हो सकती है।

हालांकि यह अक्सर कहा जाता है कि व्याख्यान देना एक खराब शिक्षण पद्धति है, यह शिक्षा के लिए अंतिम उपाय है। एक व्याख्याता को यह पता होना चाहिए कि जानकारी कैसे प्रदान करें या छात्रों की विषय मे रुचि को प्रभावी ढंग से कैसे उतपन्न करे। यदि व्याख्यान खराब तरीके से प्रस्तुत किया गया है, और उदासीन है, जिसके परिणाम स्वरूप वह विफल रहता है। यहां तक कि जब व्याख्यान सूक्ष्मता से प्रस्तुत किए जाते हैं और अच्छी तरह से व्यवस्थित होते हैं तो भी प्रभावी नही होते क्योंकि व्याख्यान देने में छात्र निष्क्रिय रहते है व्याख्यान की शुरुआत में विषय और उसके महत्व का परिचय देना प्रभावशाली होता है। व्याख्यान देने से पहले विषय की योजना बनाना व उसके सम्बन्ध में शुरू में ही कई प्रश्न पूछना उत्सुकता पैदा करता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि व्याख्याता अपने छात्रों को उनके द्वारा पहले से सीखेगए तथ्यों के बीच संबंध बनाने में मदद करता है। यह केवल समय बिताने जैसा ही है यदि शिक्षक छात्रों को यह समर्थ बनाने में सक्षम न हों कि क्षेत्र के बाहर की सूचना को वर्तमान के विषय से कैसे जोड़े। क्योंकि कानून कभी भी शून्य में काम नहीं करता है और न ही यह अकेला रह सकता है। उदाहरण के लिए आपराधिक प्रक्रिया संहिता (Cr.P.C) को भारतीय दंड संहिता (I.P.C) के अध्ययन के बिना नहीं समझा जा सकता है। Cr.P.C के शिक्षक को इसे IPC से लिंक करने में सक्षम होना चाहिए। पर्यावरण कानून का अध्ययन करने के लिए पर्यावरण कानून और संविधान के साथ-साथ पर्यावरण कानून और

आईपीसी के बीच संबंध पर भी चर्चा की जानी है। यह उन छात्रों की अपरिपक्वता को दूर करने के लिए है जो यह मानते हैं कि हर विषय अलग अलग है। यदि छात्र विषयो की तारतम्यता को अपनी बौद्धिक स्थिरता से समझने में

सक्षम हैं, तो शायद वे तर्क करने में सक्षम होंगे और इस प्रकार उनकी तर्कहीनता तर्कसंगतता में परिवर्तित हो सकती है।

Source

http://www.nmu.ac.in/Portals/46/SLM/LL.%20M.%20Paper-IV.pdf

https://ako.ac.nz/assets/Knowledge-centre/RHPF-s1019-Improving-large-class-teaching-in-law/RESEARCH-REPORTImproving-the-Effectiveness-of-Large-Class-Teaching-in-Law-Degrees.pdf